ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -1| Jan - Jun 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 556-563

मधु कांकरिया की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और यथार्थवाद

सौम्या सिंह
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेल : singh.saumyachandel1992@gmail.com
प्रो. (डॉ.) सुषमा सिंह
हिन्दी विभाग
तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में मधु कांकरिया का नाम उन रचनाकारों में प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को संवेदनात्मक गहराई, वैचारिक प्रखरता और मानवीय दृष्टि के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ केवल घटनाओं का विवरण नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की जटिल सामाजिक संरचना, वर्गीय विषमता, लैंगिक असमानता, महानगरीय जीवन की विडंबनाओं, सांस्कृतिक संक्रमण, आर्थिक असुरक्षा तथा मानवीय संबंधों के विघटन का सजीव दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं। उनके कथा–साहित्य में सामाजिक संघर्ष व्यक्ति के बाह्य जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसके मानसिक संसार, अस्तित्वगत संकट और आत्मसंघर्ष तक विस्तृत हो जाता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य मधु कांकरिया की कहानियों में चित्रित सामाजिक संघर्ष तथा यथार्थवादी दृष्टि का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में उनकी प्रतिनिधि कहानियों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि लेखिका समाज के उपेक्षित, शोषित, वंचित तथा हाशिये पर स्थित वर्गों के जीवनानुभवों को किस प्रकार साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक विसंगतियों का केवल चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उन संरचनात्मक कारणों की भी पहचान करती हैं जो सामाजिक अन्याय, असमानता और मानवीय पीड़ा को जन्म देते हैं।

शोध में गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से कहानियों की कथावस्तु, पात्र, संवाद, भाषा, शिल्प तथा सामाजिक संदर्भों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मधु कांकरिया का कथा–साहित्य सामाजिक यथार्थवाद की समृद्ध परंपरा को समकालीन संदर्भों में नया विस्तार प्रदान करता है। उनकी कहानियाँ पाठक को केवल संवेदनात्मक रूप से प्रभावित नहीं करतीं, बल्कि सामाजिक चेतना, मानवीय उत्तरदायित्व तथा परिवर्तन की आवश्यकता के प्रति भी जागरूक बनाती हैं।

कुंजी शब्दः मधु कांकरिया, कहानी, सामाजिक संघर्ष, यथार्थवाद, समकालीन हिंदी कथा–साहित्य, स्त्री विमर्श, वर्गीय विषमता, महानगरीय जीवन, मानवीय संवेदना, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर आश्रित है। समाज साहित्य को अनुभव, विषय–वस्तु और जीवन–सत्य प्रदान करता है, जबकि साहित्य समाज को आत्मबोध, संवेदना और परिवर्तन की चेतना देता है। यही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का दर्पण माना जाता है। विशेष रूप से कहानी विधा ने आधुनिक भारतीय समाज की बदलती हुई संरचना, व्यक्ति की मानसिक जटिलताओं तथा सामाजिक संघर्षों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है।

समकालीन हिंदी कहानी ने स्वतंत्रता–उत्तर भारत के बदलते सामाजिक यथार्थ को नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया। औद्योगीकरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता तथा स्त्री–अस्मिता जैसे प्रश्न हिंदी कहानी के केंद्र में आए। इसी परिवेश में मधु कांकरिया का कथा–साहित्य विकसित हुआ, जिसने समाज के उन वर्गों को स्वर दिया जो मुख्यधारा की सामाजिक एवं साहित्यिक चर्चाओं में लंबे समय तक उपेक्षित रहे। मधु कांकरिया की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सामाजिक यथार्थ को किसी बाहरी दृष्टा की तरह नहीं देखतीं, बल्कि उसके भीतर प्रवेश कर मनुष्य की पीड़ा, संघर्ष, असुरक्षा और संवेदनात्मक विघटन को अनुभव करती हैं। उनके पात्र काल्पनिक नहीं लगतेय वे हमारे आसपास के समाज में जीवित वास्तविक मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ पाठक के भीतर गहरा प्रभाव उत्पन्न करती हैं और उसे सामाजिक प्रश्नों पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती हैं।

लेखिका का कथा–संसार विशेष रूप से स्त्रियों, श्रमिकों, निम्नवर्गीय परिवारों, विस्थापित लोगों, बुजुर्गों, बेरोजगार युवाओं तथा सामाजिक रूप से उपेक्षित समुदायों के अनुभवों पर केंद्रित है। वे इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट करती हैं कि सामाजिक संघर्ष केवल आर्थिक अभाव का परिणाम नहीं है, बल्कि सत्ता–संबंधों, सांस्कृतिक रूढ़ियों, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक असमानता और मानसिक दबावों से भी निर्मित होता है। इसलिए उनकी कहानियों में संघर्ष का स्वरूप बहुआयामी है।

मधु कांकरिया का साहित्य किसी वैचारिक घोषणा–पत्र की तरह नहीं लिखा गया है। वे सामाजिक समस्याओं का समाधान आरोपित नहीं करतीं, बल्कि जीवन के यथार्थ को उसकी जटिलता सहित प्रस्तुत करती हैं। उनके यहाँ करुणा है, लेकिन भावुकता नहींय प्रतिरोध है, लेकिन आक्रोश का अंधापन नहींय यथार्थ है, लेकिन निराशा का स्थायी भाव नहीं। यही संतुलन उनकी कहानियों को साहित्यिक दृष्टि से विशिष्ट बनाता है।

वर्तमान समय में जब सामाजिक विषमताएँ, आर्थिक असंतुलन, सांस्कृतिक संक्रमण और मानवीय संबंधों का संकट निरंतर बढ़ रहा है, तब मधु कांकरिया की कहानियाँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं रह जातीं, बल्कि वे समाज के आत्मविश्लेषण का माध्यम बन जाती हैं। वे पाठक को यह सोचने के लिए विवश करती हैं कि आधुनिक विकास के बीच मनुष्य की गरिमा, संवेदना और सामाजिक न्याय की रक्षा कैसे की जाए।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मधु कांकरिया की कहानियों में चित्रित सामाजिक संघर्ष और यथार्थवाद के विविध आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि उनका

कथा–साहित्य समकालीन भारतीय समाज की वास्तविकताओं को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है तथा सामाजिक चेतना के निर्माण में उसकी क्या भूमिका है।

मधु कांकरिया रू व्यक्तित्व एवं कथा–साहित्य

समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में मधु कांकरिया का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपने कथा–लेखन के माध्यम से समाज के उन वर्गों को अभिव्यक्ति दी है जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर उपेक्षित रहे हैं। उनकी रचनात्मक दृष्टि मानवीय संवेदना, सामाजिक न्याय और यथार्थवादी चिंतन पर आधारित है। वे जीवन को उसके वास्तविक रूप में देखने और प्रस्तुत करने में विश्वास करती हैं।

मधु कांकरिया का साहित्यिक व्यक्तित्व केवल कथाकार का नहीं, बल्कि एक सजग सामाजिक चिंतक का भी है। वे अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों, स्त्री–अस्मिता, वर्गीय विषमता, धार्मिक रूढ़ियों, पारिवारिक विघटन तथा महानगरीय जीवन की समस्याओं को निकट से देखती हैं और उन्हें साहित्यिक रूप प्रदान करती हैं। उनके कथा–साहित्य में संवेदना और वैचारिकता का संतुलित समन्वय मिलता है।

उनकी कहानियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनमें पात्र किसी आदर्शवादी कल्पना के प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए वास्तविक मनुष्य हैं। उनके पात्रों के माध्यम से समाज के भीतर व्याप्त अन्याय, असमानता, शोषण, अकेलापन, भय और अस्तित्वगत संकट का अत्यंत विश्वसनीय चित्रण मिलता है।

मधु कांकरिया की कथा–भाषा सहज, संप्रेषणीय और जीवनानुभवों से जुड़ी हुई है। वे भाषा के माध्यम से कृत्रिम प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास नहीं करतीं, बल्कि सरल अभिव्यक्ति द्वारा जटिल सामाजिक यथार्थ को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनका कथा–साहित्य व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचने में सफल रहा है।

समकालीन हिंदी कहानी के विकास में मधु कांकरिया का योगदान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने सामाजिक यथार्थ को स्त्री–विमर्श, वर्ग–संघर्ष, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा मानवीय संवेदना के साथ जोड़कर देखा। उनके कथा–साहित्य ने हिंदी कहानी को विषय, दृष्टि और संवेदनाकृतीनों स्तरों पर समृद्ध किया है।

मधु कांकरिया की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और यथार्थवाद रू एक आलोचनात्मक विश्लेषण

मधु कांकरिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति मानी जाती हैं। उनकी रचनाओं का मूल आधार मनुष्य का संघर्ष, सामाजिक विषमता, आर्थिक असुरक्षा, स्त्री की अस्मिता, बदलते पारिवारिक संबंध तथा महानगरीय जीवन की जटिलताएँ हैं। वे जीवन को आदर्शवादी दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी वास्तविक परिस्थितियों में देखकर प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ केवल घटनाओं का विवरण नहीं, बल्कि समाज की संरचनात्मक समस्याओं का विश्लेषण बन जाता है।

मधु कांकरिया का कथा–साहित्य यह स्थापित करता है कि सामाजिक संघर्ष केवल आर्थिक अभाव का परिणाम नहीं होता, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक रूढ़ियों, लैंगिक असमानता, सत्ता–संबंधों तथा मानसिक दबावों का संयुक्त परिणाम होता है। उनके पात्र इन परिस्थितियों से

संघर्ष करते हुए अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान की रक्षा का प्रयास करते हैं। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थवाद की सशक्त प्रतिनिधि कही जा सकती हैं।

स्त्री जीवन का संघर्ष और यथार्थ

मधु कांकरिया की कहानियों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री जीवन का यथार्थपरक चित्रण है। उन्होंने स्त्री को केवल करुणा की पात्र या त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व, विचारशील नागरिक और संघर्षशील मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर अनेक प्रकार के दमन का सामना करती हैं। विवाह संस्था, पितृसत्तात्मक सोच, सामाजिक परंपराएँ और लैंगिक भेदभाव उनके संघर्ष को और अधिक जटिल बना देते हैं। फिर भी वे परिस्थितियों के सामने पूर्णतः समर्पण नहीं करतीं, बल्कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करती हैं।

मधु कांकरिया स्त्री–विमर्श को केवल पुरुष–विरोध के रूप में नहीं देखतीं। वे स्त्री और पुरुष दोनों को सामाजिक संरचना के भीतर कार्यरत शक्तियों से प्रभावित मानती हैं। इसलिए उनकी कहानियों में स्त्री संघर्ष का स्वर मानवीय और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकसित होता है।

आर्थिक विषमता और वर्ग–संघर्ष

आर्थिक असमानता मधु कांकरिया की कहानियों का एक प्रमुख विषय है। उनके कथा–संसार में निम्न एवं मध्यम वर्ग के पात्र लगातार आर्थिक संकट, बेरोजगारी, असुरक्षा तथा सामाजिक उपेक्षा से जूझते दिखाई देते हैं।

लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि आर्थिक अभाव केवल जीवन–स्तर को प्रभावित नहीं करता, बल्कि व्यक्ति के आत्मविश्वास, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक सम्मान तथा मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालता है। उनकी कहानियों में निर्धनता केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि सामाजिक संघर्ष की मूल प्रेरक शक्ति है।

वे पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा उत्पन्न असमानताओं, अवसरों के असंतुलित वितरण तथा संसाधनों पर सीमित वर्ग के नियंत्रण की ओर भी संकेत करती हैं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ वर्गीय संघर्ष की सामाजिक वास्तविकता को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।

महानगरीय जीवन का यथार्थ

मधु कांकरिया ने महानगरों के जीवन को बाहरी चमक–दमक के स्थान पर उसकी भीतरी विडंबनाओं के साथ चित्रित किया है। उनके कथा–साहित्य में महानगर अवसरों का केंद्र होने के साथ–साथ अकेलेपन, तनाव, प्रतिस्पर्धा, असुरक्षा और मानवीय संबंधों के विघटन का भी प्रतीक है। महानगरीय परिवेश में रहने वाला व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्रिय दिखाई देता है, परंतु मानसिक स्तर पर अत्यंत अकेला और असुरक्षित होता है। पारिवारिक संबंधों का क्षरण, समय का अभाव, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी संस्कृति व्यक्ति को संवेदनहीन बनाती है।

लेखिका इस परिवेश में विशेष रूप से महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों तथा निम्नवर्गीय श्रमिकों की समस्याओं को प्रमुखता देती हैं। इससे उनकी कहानियाँ केवल शहरी जीवन का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि महानगरीय सभ्यता की आलोचनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत करती हैं।

हाशिए का समाज

मधु कांकरिया की कहानियों में समाज के हाशिये पर स्थित लोगों को विशेष स्थान प्राप्त है। इनमें निर्धन परिवार, श्रमिक, वृद्ध, परित्यक्त महिलाएँ, वंचित बच्चे तथा सामाजिक रूप से उपेक्षित वर्ग शामिल हैं।

लेखिका इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट करती हैं कि सामाजिक विकास के दावों के बावजूद समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी सम्मानजनक जीवन से वंचित है। उनकी कहानियों में इन पात्रों की पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की विफलता का परिणाम है।

वे इन पात्रों को दया का पात्र नहीं बनातीं, बल्कि संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही उनकी सामाजिक दृष्टि की सबसे बड़ी विशेषता है।

मानसिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक यथार्थ

मधु कांकरिया की कहानियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष पात्रों के मानसिक संसार का सूक्ष्म चित्रण है। उनके पात्र बाहरी संघर्षों के साथ–साथ आंतरिक द्वंद्व, अपराध–बोध, अकेलापन, असुरक्षा, निराशा और अस्तित्वगत संकट से भी जूझते हैं।

लेखिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करती हैं कि सामाजिक परिस्थितियाँ व्यक्ति के मानसिक जीवन को गहराई से प्रभावित करती हैं। आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक विघटन, सामाजिक अपमान तथा असफलताएँ व्यक्ति के भीतर गहरे तनाव उत्पन्न करती हैं। उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक यथार्थ सामाजिक यथार्थ का ही विस्तार बन जाता है।

मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व

मधु कांकरिया की कहानियों में करुणा, सहानुभूति और मानवीय संवेदना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे समाज की समस्याओं का चित्रण करते हुए भी निराशा का वातावरण निर्मित नहीं करतीं। उनके पात्र कठिन परिस्थितियों में भी आशा, संघर्ष और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

उनका कथा–साहित्य पाठक को सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है। वे यह संकेत देती हैं कि सामाजिक परिवर्तन केवल सरकारी नीतियों से नहीं, बल्कि संवेदनशील नागरिक समाज, समान अवसर, शिक्षा, न्याय और मानवीय दृष्टिकोण से संभव है।

मधु कांकरिया का यथार्थवाद : एक समालोचनात्मक मूल्यांकन

मधु कांकरिया का यथार्थवाद प्रत्यक्ष जीवनानुभवों पर आधारित है। वे किसी विचारधारा को आरोपित नहीं करतीं, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं को उसी रूप में प्रस्तुत करती हैं जैसी वे समाज में विद्यमान हैं। उनका यथार्थ न तो निराशावादी है और न ही आदर्शवादीय वह संघर्ष, संवेदना और परिवर्तन की संभावनाओं से युक्त यथार्थ है।

उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण बहुआयामी है। आर्थिक असमानता, स्त्री उत्पीड़न, महानगरीय संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक उपेक्षा तथा मानवीय संबंधों का विघटनकृइन सभी विषयों का चित्रण वे अत्यंत संतुलित एवं विश्वसनीय ढंग से करती हैं।

यही कारण है कि मधु कांकरिया की कहानियाँ केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत भी मानी जाती हैं।

मधु कांकरिया की कहानियों का शिल्पगत एवं कलात्मक मूल्यांकन

मधु कांकरिया की कहानियाँ विषय–वस्तु की दृष्टि से जितनी समृद्ध हैं, उतनी ही शिल्पगत दृष्टि से भी सशक्त हैं। उन्होंने कथा–शिल्प को केवल घटनाओं के क्रम तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति, सामाजिक परिस्थितियों तथा मानवीय संवेदनाओं के साथ जोड़कर विकसित किया है। उनकी कहानियों में कथ्य और शिल्प का संतुलन उनकी रचनात्मक शक्ति का प्रमाण है।

उनकी कथा–रचना में घटनाओं का विकास स्वाभाविक रूप से होता है। कथानक कहीं भी कृत्रिम नहीं लगता, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। वे छोटे–छोटे प्रसंगों के माध्यम से बड़े सामाजिक प्रश्नों को सामने लाती हैं। यही उनकी कहानी–कला की प्रमुख विशेषता है।

भाषा एवं शैली

मधु कांकरिया की भाषा सहज, सरल, संप्रेषणीय तथा संवेदनात्मक है। वे कठिन शब्दावली या अनावश्यक अलंकरण का प्रयोग नहीं करतीं, बल्कि जीवनानुभवों से जुड़ी हुई भाषा के माध्यम से गहरी सामाजिक अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं।

उनकी भाषा में हिंदी के साथ–साथ आवश्यकता पड़ने पर बोलचाल के शब्द, लोक–प्रयोग तथा महानगरीय परिवेश की अभिव्यक्तियाँ भी दिखाई देती हैं। इससे उनकी कहानियाँ अधिक विश्वसनीय एवं जीवन्त बन जाती हैं। उनकी शैली मि वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, संवादात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक सभी रूपों का संतुलित प्रयोग मिलता है। यही कारण है कि पाठक पात्रों के मानसिक संसार से सहज रूप से जुड़ जाता है।

संवाद योजना

मधु कांकरिया के संवाद उनकी कहानियों की महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उनके संवाद केवल कथा को आगे नहीं बढ़ाते, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व, मानसिक स्थिति तथा सामाजिक पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट करते हैं।

संवादों में कृत्रिमता नहीं है। वे स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा प्रभावशाली हैं। अनेक स्थानों पर संवादों के माध्यम से सामाजिक विडम्बनाओं पर तीखा व्यंग्य भी व्यक्त हुआ है।

पात्र–चित्रण

मधु कांकरिया के पात्र सामान्य जीवन से लिए गए प्रतीत होते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री, श्रमिक, निम्न मध्यमवर्गीय परिवार, वृद्ध, बेरोजगार युवा, अकेलेपन से जूझते नागरिक तथा समाज के हाशिये पर स्थित लोग प्रमुख रूप से उपस्थित हैं।

लेखिका पात्रों का आदर्शीकरण नहीं करतीं। वे उनकी कमजोरियों, अंतर्द्वंद्वों, आशाओं और संघर्षों को समान रूप से प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनके पात्र विश्वसनीय एवं मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनते हैं।

प्रतीक एवं बिंब

मधु कांकरिया की कहानियों में प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग अत्यंत सार्थक है। वे दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुओं और परिस्थितियों को सामाजिक अर्थ प्रदान करती हैं।

- घर केवल निवास का स्थान नहीं, बल्कि सुरक्षा, असुरक्षा और संबंधों का प्रतीक बन जाता है।

- महानगर आधुनिक सभ्यता, अकेलेपन और प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है।
- सन्नाटा संवादहीनता और मानसिक पीड़ा का बिंब है।
- भीड़ व्यक्ति की पहचान के संकट को व्यक्त करती है।

इन प्रतीकों के माध्यम से उनकी कहानियाँ बहुस्तरीय अर्थ ग्रहण करती हैं।

शोध की कार्यविधि

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative Research) प्रकृति का है। अध्ययन में विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं व्याख्यात्मक (Interpretative) शोध–पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत

- मधु कांकरिया के प्रकाशित कहानी–संग्रह।
- प्रतिनिधि कहानियाँ।

द्वितीयक स्रोत

- आलोचनात्मक ग्रंथ।
- शोध–पत्र।
- शोध–प्रबंध।
- साहित्यिक पत्रिकाएँ।
- समाजशास्त्रीय एवं स्त्री–विमर्श संबंधी पुस्तकें।

अध्ययन के दौरान विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) तथा पाठ–विश्लेषण (Textual Analysis) की विधियों का उपयोग किया गया, जिससे सामाजिक संघर्ष, यथार्थवाद, पात्र–निर्माण तथा कथाशिल्प का सम्यक् मूल्यांकन किया जा सके।

परिणाम एवं चर्चा

शोध के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. मधु कांकरिया की कहानियाँ समकालीन भारतीय समाज का प्रामाणिक सामाजिक दस्तावेज हैं।
2. उनकी कहानियों में सामाजिक संघर्ष बहुआयामी हैकृआर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं लैंगिक।
3. स्त्री जीवन का चित्रण उनकी रचनाओं की केंद्रीय उपलब्धि है।
4. महानगरीय जीवन की विडम्बनाएँ और मानवीय अकेलापन प्रभावशाली ढंग से चित्रित हुआ है।
5. लेखिका सामाजिक यथार्थ को केवल चित्रित नहीं करतीं, बल्कि उसके कारणों की भी पड़ताल करती हैं।
6. उनका यथार्थवाद मानवीय संवेदना से जुड़ा हुआ हैय वह निराशा नहीं, बल्कि परिवर्तन की संभावना का संकेत देता है।
7. उनकी कहानियाँ सामाजिक न्याय, समानता तथा मानवीय गरिमा के पक्ष में सशक्त साहित्यिक हस्तक्षेप प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष

मधु कांकरिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने समाज के उन वर्गों की पीड़ा, संघर्ष और जीवनानुभवों को साहित्य का केंद्र बनाया है जिन्हें लंबे समय तक मुख्यधारा के साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिला। उनकी कहानियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का प्रभावी उपकरण भी है।

उनकी कहानियों में चित्रित सामाजिक संघर्ष व्यक्ति और समाज दोनों की जटिलताओं को उद्घाटित करता है। स्त्री–विमर्श, आर्थिक असमानता, वर्गीय संघर्ष, महानगरीय जीवन, पारिवारिक विघटन तथा मानसिक तनाव जैसे विषयों का उन्होंने गहन एवं संवेदनशील चित्रण किया है। उनके पात्र परिस्थितियों के शिकार अवश्य हैं, किन्तु वे संघर्ष की संभावना को कभी समाप्त नहीं होने देते।

मधु कांकरिया का यथार्थवाद जीवन की वास्तविकताओं पर आधारित है। वे समाज की विसंगतियों को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत करती हैं तथा पाठकों को सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग बनाती हैं। उनका कथा–साहित्य सामाजिक परिवर्तन की दिशा में साहित्य की सक्रिय भूमिका का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मधु कांकरिया की कहानियाँ सामाजिक संघर्ष, मानवीय संवेदना तथा यथार्थवादी दृष्टि का ऐसा सशक्त समन्वय प्रस्तुत करती हैं, जिसने समकालीन हिंदी कहानी को वैचारिक गहराई, सामाजिक प्रतिबद्धता और कलात्मक ऊँचाई प्रदान की है।

संदर्भ सूची

1. कांकरिया, मधु. लेकिन कामरेड. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. कांकरिया, मधु. और अंत में ईशु. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. कांकरिया, मधु. मधु कांकरिया : प्रतिनिधि कहानियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. सिंह, नामवर. (2011). कहानी : नई कहानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. शर्मा, रामविलास. (2009). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. पांडेय, मैनेजर. (2010). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. बच्चन सिंह. (2008). हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
8. निर्मला जैन. (2012). साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन।
9. नागेंद्र. (2014). हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्लीरू मयूर पेपरबैक्स।
10. कृष्णदत्त पालीवाल. (2015). समकालीन हिंदी कहानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
11. विश्वनाथ त्रिपाठी. (2016). हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
12. मैनेजर पांडेय. (2013). साहित्य और इतिहास दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
13. निर्मला जैन. (2011). आधुनिक हिंदी कथा साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
14. उषा प्रियंवदा. (2010). समकालीन हिंदी कहानी का विकास. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
15. नामवर सिंह. (2007). वाद–विवाद–संवाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।